eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

महाकुंभ 2025 : भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रचार और सरकार की नीतियाँ

अशोक कुमार यादव[1] एवं डॉ. अभिलाष सिंह यादव[2]

[1]शोधछात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, महामाया राजकीय महाविद्यालय धनूपुर, हण्डिया ,प्रयागराज, प्रो० राजेन्द्र सिंह (रज्जू भय्या) विश्वविद्यालय प्रयागराज

[2]शोध पर्यवेक्षक, एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, महामाया राजकीय महाविद्यालय धनूपुर, हण्डिया, प्रयागराज

Received: 29 June 2025 Accepted & Reviewed: 29 June 2025, Published: 30 June 2025

Abstract

प्रयागराज महाकुंभ एक धार्मिक आयोजन के साथ– साथ भारतीय संस्कृति की वैश्विक प्रतिष्ठा, प्रशासनिक उत्कृष्टता और आर्थिक विकास का प्रतीक है। 2017 में यूनेस्को द्वारा इसे अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मान्यता दिए जाने के बाद, यह आयोजन भारत की 'सॉफ्ट पावर' को सुदृढ़ करने में एक प्रभावी माध्यम बन चुका है। महाकुंभ 2025 को दिव्य, भव्य और डिजिटल आयोजन के रूप में प्रस्तुत करने की रणनीति इसे वैश्विक मंच पर एक विशेष पहचान प्रदान कर रही है। यह शोध पत्र महाकुंभ 2025 के आयोजन में स्थिरता, वैश्विक प्रचार, और सांस्कृतिक पर्यटन के तीन प्रमुख आयामों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

यह शोध इस पर केंद्रित है कि किस प्रकार सरकार ने नवाचार और प्रभावी नीतियों के माध्यम से महाकुंभ को केवल एक धार्मिक आयोजन से कहीं आगे बढ़ाकर एक वैश्विक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिघटना में परिवर्तित कर दिया है। शोध पद्धति में प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है, जिसमें सरकारी नीतियाँ, मीडिया रिपोर्ट्स, आयोजकों, शोधकर्ताओं एवं पर्यटकों के अनुभव सम्मिलित हैं। इस शोध पत्र से स्पष्ट होता है कि कुंभ मेला भारतीय संस्कृति की वैश्विक पहचान को कैसे सुदृढ़ करता है, पर्यटन को कैसे प्रोत्साहित करता है और भारत की सांस्कृतिक कूटनीति को किस प्रकार सशक्त बनाता है।

मुख्य शब्द– प्रयागराज, महाकुंभ, अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर, स्थिरता, वैश्विक प्रचार, सांस्कृतिक पर्यटन, पर्यावरण संरक्षण, भारत की सॉफ्ट पावर, सांस्कृतिक कूटनीति, सरकारी नीतियाँ।

Introduction

"प्रयागराज महाकुंभ भारतीय आस्था का संगम है, जहाँ धर्म, संस्कृति और आध्यात्मिकता एकजुट होती हैं।"[1] यह केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रचार और प्रशासनिक उत्कृष्टता का प्रतीक है।"2017 में, यूनेस्को ने कुंभ मेले को अपनी "अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर"[2] की सूची में शामिल किया,"[3] जो इसे भारतीय संस्कृति की वैश्विक मान्यता का प्रमाण बनाता है।

इस आयोजन की महत्ता न केवल इसके ऐतिहासिक और पौराणिक महत्व में निहित है, बल्कि यह भारत की "सॉफ्ट पावर"[4] को सुदृढ़ करने और सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक प्रगति में सरकार की सक्रिय भागीदारी को भी दर्शाता है। "महाकुंभ का पौराणिक महत्व समुद्र मंथन की कथा से जुड़ा है, जिसमें अमृत की बूँदें पृथ्वी के चार स्थानोंकृहरिद्वार, प्रयागराज, उज्जैन और नासिक मे गिरी थीं। इन स्थलों पर कुंभ का आयोजन हर छह और बारह वर्षों के अंतराल पर होता है।"[5] "प्रयागराज महाकुंभ विशेष रूप से पवित्र

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

माना जाता है क्योंकि यह गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर स्थित है। यह आयोजन न केवल आस्था का प्रतीक है, बल्कि सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक एकता का भी परिचायक है।"[6] 2019 में आयोजित प्रयागराज कुंभ ने न केवल आस्था के स्तर पर, बल्कि प्रशासनिक क्षमता और सांस्कृतिक प्रदर्शन में भी नए आयाम स्थापित किए।

"यह आयोजन गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में तीन प्रमुख उपलब्धियों के लिए दर्ज हुआ– 1.सबसे बड़ा सफाई अभियान 2.एक ही स्थान पर सबसे बड़ा जनसमूह 3. सार्वजनिक स्थल पर सबसे बड़ा पेंटिंग अभियान।"[7] "2025 में, सरकार ने इसे और अधिक भव्य और समावेशी बनाने के लिए योजनाएँ बनाई हैं, जिसमें 40 करोड़ तीर्थयात्रियों और 15 लाख विदेशी पर्यटकों की भागीदारी की उम्मीद है।"[8]

"महाकुंभ केवल धार्मिक आयोजन नहीं है यह भारत की सांस्कृतिक सॉफ्ट पावर का दूत भी है।"[9] 'सॉफ्ट पावर' का तात्पर्य उस शक्ति से है, जो संस्कृति, परंपराओं और विचारों के माध्यम से वैश्विक स्तर पर प्रभाव डालती है। "2019 में 10 लाख विदेशी पर्यटक कुंभ में शामिल हुए थे।"[10] और 2025 में यह संख्या बढ़कर 15 लाख तक पहुँचने की संभावना है। महाकुंभ में आने वाले विदेशी पर्यटक भारतीय संस्कृति, योग, ध्यान, और अध्यात्म के अनुभव के लिए आकर्षित होते हैं। यह आयोजन भारतीय सभ्यता के उन मूल्यों को प्रस्तुत करता है, जो सार्वभौमिकता, सहिष्णुता और सामूहिकता पर आधारित हैं।

इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य महाकुंभ 2025 के आयोजन में स्थिरता, वैश्विक प्रचार और सांस्कृतिक पर्यटन के तीन प्रमुख पहलुओं का विश्लेषण करना है। इस शोध में यह समझने का प्रयास किया गया कि किस प्रकार सरकार ने इन तीन क्षेत्रों में नवाचार और योजनाओं को लागू कर महाकुम्भ मेला को न केवल एक धार्मिक अवसर के रूप में, बल्कि एक वैश्विक पर्यटन और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्थापित किया है।

यह शोध पत्र महाकुम्भ मेले में स्थिरता के दृष्टिकोण से पर्यावरणीय संरक्षण के प्रयासों को, वैश्विक प्रचार की रणनीतियों के तहत पर्यटन को बढ़ावा देने के उपायों को और सांस्कृतिक पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए किए गए कदमों को प्रस्तुत करेगा। इस शोध के माध्यम से यह जानने की कोशिश की जाएगी कि इन पहलुओं ने महाकुंभ के आयोजन को किस प्रकार से पर्यटकों, श्रद्धालुओं और वैश्विक समुदाय के बीच एक अद्वितीय पहचान दिलाई है। साथ ही यह भी विश्लेषण करेगा कि इन योजनाओं के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक धरोहर और पर्यावरणीय महत्व को किस प्रकार वैश्विक स्तर पर बढ़ावा दिया गया है।

सरकारी योजना का विश्लेषण

1. स्थिरता

महाकुम्भ 2025 के आयोजन में "स्थिरता"[11] के दृष्टिकोण से कई महत्वपूर्ण पहलुओं पर ध्यान दिया गया है। इस आयोजन के लिए स्थापित की गई विशाल संरचनाओं और सेवा योजनाओं में पर्यावरण संरक्षण और टिकाऊ विकास के सिद्धांतों का पालन किया गया है।" इस दिशा में प्रमुख कदम के रूप में 12,000 फाइबर रिइनफोर्स्ड प्लास्टिक (एफआरपी) शौचालय, 16,100 प्रीफैब्रिकेटेड स्टील शौचालय और 20,000 सामुदायिक मूत्रालय की स्थापना की गई है।"[12] इन सुविधाओं का उद्देश्य न केवल भीड़–भाड़ वाले कुम्भ मेले के दौरान

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

स्वच्छता बनाए रखना है, बल्कि पर्यावरणीय प्रभाव को भी कम करना है।

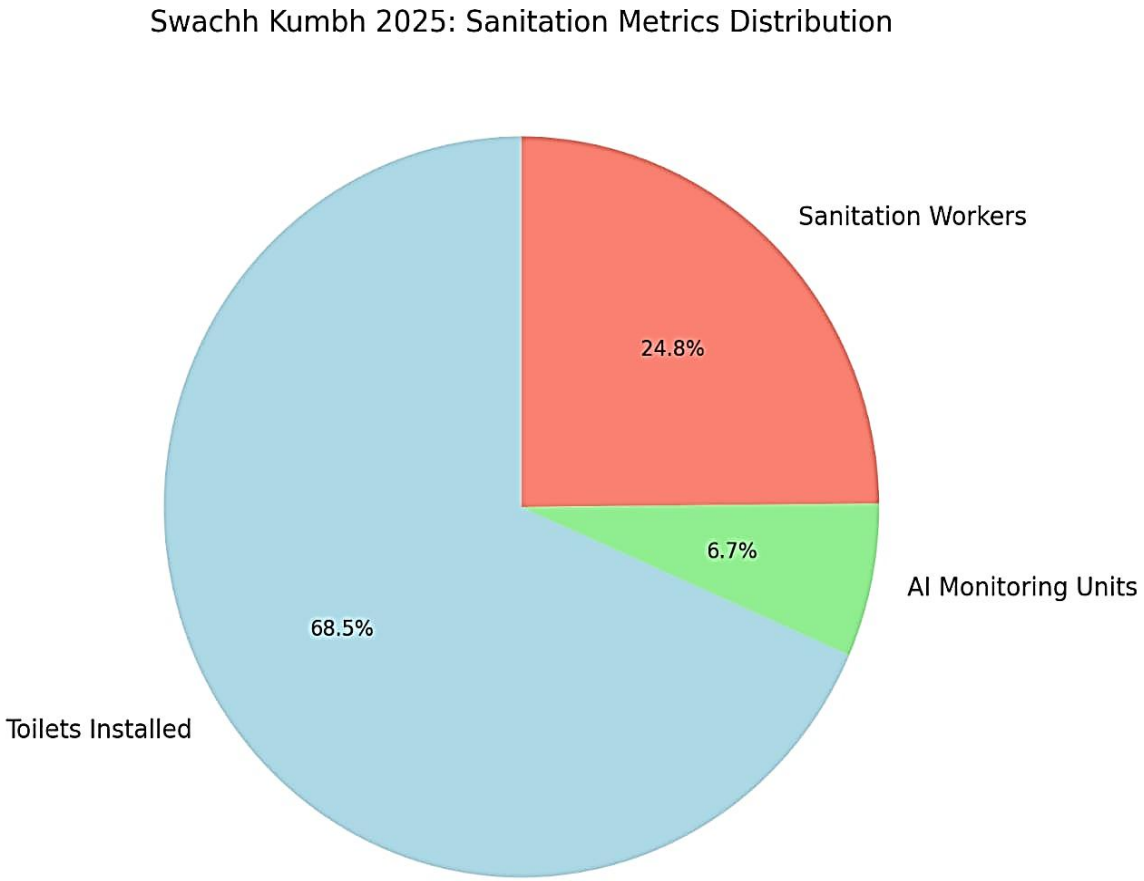

Source:PIB

"इसके अतिरिक्त, "मियावाकी पद्धति"[13] के तहत वृक्षारोपण परियोजना को ध्यान में रखते हुए 1,46,700 पौधे विभिन्न स्थानों पर लगाए गए हैं। यह विधि शहरी क्षेत्रों में वनस्पति का तेज़ी से विकास करने का एक प्रभावी उपाय साबित हुई है।

विशेषकर नेवादा, समोगर और बसवार जैसे प्रदूषित क्षेत्रों में मियावाकी तकनीक से बंजर ज़मीन पर हरे–भरे जंगल उगाए गए हैं जो न केवल कार्बन अवशोषण में मदद करेंगे बल्कि जलवायु परिवर्तन को भी कम करने में सहायक होंगे। इस परियोजना ने न केवल पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा दिया है, बल्कि यह प्रदूषण को नियंत्रित करने और स्थानीय जैव विविधता को बढ़ाने का भी काम कर रही है।"[14]

2. वैश्विक प्रचार

महाकुम्भ मेले के वैश्विक प्रचार के लिए सरकार ने एक सशक्त मीडिया रणनीति बनाई है। "पर्यटन मंत्रालय ने महाकुंभ 2025 मे 5000 वर्ग फीट का विशाल अतुल्य भारत मंडप की स्थापना की है जहां विदेशी पर्यटक, शोधकर्ता, और पत्रकार भारतीय सांस्कृतिक धरोहर से परिचित हो सकेंगे। इस मंडप में महाकुम्भ मेला की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व को दर्शाया जाएगा"[15] जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की यात्रा और

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

पर्यटन क्षमता को बढ़ावा देगा।

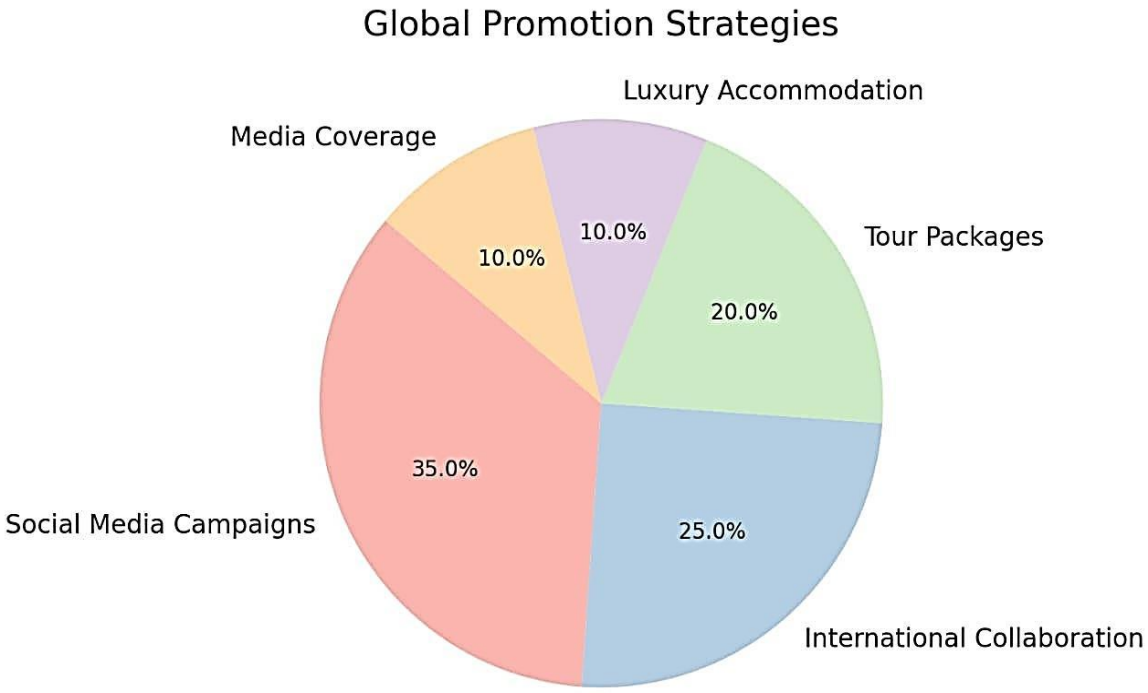

Source:PIB

इसके साथ ही, सोशल मीडिया पर चलाए गए अभियानों ने मेले के प्रचार को और अधिक प्रभावी बनाया है। "#महाकुंभ 2025 और #स्पिरिचुअल प्रयागराज जैसे हैशटैग्स के माध्यम से देश–विदेश में इस महाकुंभ के महत्व को साझा किया जा रहा है। विभिन्न सामाजिक मीडिया प्लेटफार्मों पर इंटरएक्टिव पोस्ट और प्रतियोगिताओं के जरिए वैश्विक दर्शकों से जुड़ने की योजना बनाई गई है। इससे न केवल महाकुम्भ मेला की महिमा को प्रचारित किया जा रहा है, बल्कि यह प्रयागराज को एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित करने का एक कदम भी है। यात्रियों की सुविधा के लिए, मंत्रालय ने एयरलाइन सेवा "अलायंस एयर"[16] के साथ साझेदारी की है ताकि घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए प्रयागराज तक पहुँचने में आसानी हो सके।"[17] इसके अलावा, रेलवे और परिवहन विभाग के सहयोग से, आगंतुकों के लिए विभिन्न यात्रा सुविधाएँ सुनिश्चित की गई हैं। इन सब प्रयासों से कुम्भ मेले का वैश्विक प्रचार और भारत के पर्यटन क्षेत्र को प्रोत्साहन मिलेगा।

3. सांस्कृतिक पर्यटन

महाकुम्भ 2025 सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। महाकुम्भ मेला न केवल एक धार्मिक आयोजन है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति, परंपराओं,और आध्यात्मिकता का भी गहरा प्रतीक है। इस आयोजन में लाखों पर्यटक और श्रद्धालु हिस्सा लेते हैं, जो भारत के समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को सीधे अनुभव करते हैं। सांस्कृतिक पर्यटन के दृष्टिकोण से महाकुम्भ मेले का महत्व बढ़ जाता है क्योंकि यह आयोजन पूरे विश्व से आने वाले पर्यटकों को एक अद्वितीय भारतीय अनुभव प्रदान करता है। यहां विभिन्न संस्कृतियों का मिलाजुला रूप देखने को मिलता है, और यह पर्यटकों को भारतीय

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

कला, संगीत, नृत्य, और धार्मिक अनुष्ठानों का अनुभव करने का अवसर प्रदान करता है। सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न प्रयास किए हैं, जैसे कि "कुम्भवाणी"[18] समाचार बुलेटिन के माध्यम से मेले के महत्वपूर्ण पहलुओं को जनता तक पहुँचाना और "देखो अपना देश"[19] जैसी पहल के तहत भारतीय पर्यटन स्थलों को प्रमोट करना।

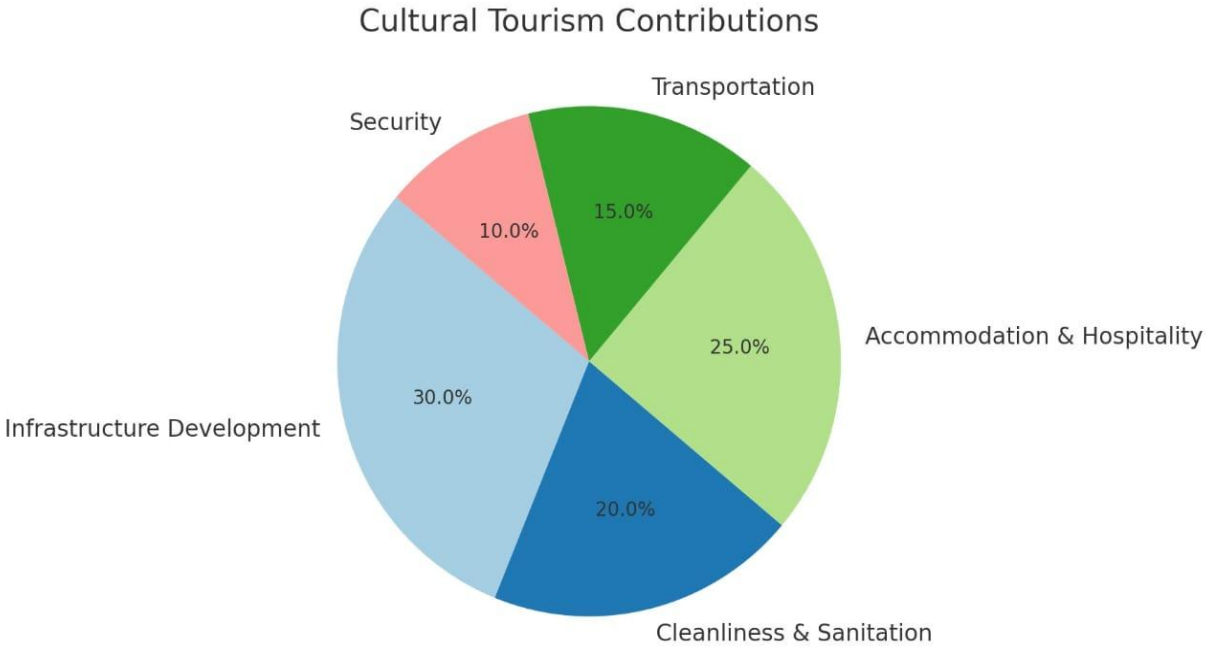

Source:PIB

साथ ही, "महाकुम्भ मेले के दौरान, सरकार ने भारतीय पर्यटन को लेकर विभिन्न साझेदारियों को बढ़ावा दिया है, जैसे "यूपीएसटीडीसी"[20],"आईआरसीटीसी"[21] और "आईटीडीसी"[22] के साथ मिलकर विशेष पैकेज तैयार करना और पर्यटकों को भव्य और आरामदायक आवास सुविधाएँ प्रदान करना। यह न केवल भारतीय संस्कृति को प्रोत्साहित करता है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय दर्शकों को आकर्षित करने का भी एक प्रभावी तरीका है।"[23] महाकुम्भ 2025 के आयोजन में स्थिरता, वैश्विक प्रचार और सांस्कृतिक पर्यटन को केंद्र में रखते हुए की गई योजनाएँ और पहलें न केवल भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक महत्ता को प्रस्तुत करती हैं, बल्कि यह पर्यावरणीय और आर्थिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इस प्रकार, महाकुम्भ मेला न केवल भारत की सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है, बल्कि यह देश के पर्यटन और स्थिरता के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर एक नई दिशा स्थापित कर रहा है।

शोध पद्धति– इस शोध पत्र में महाकुंभ 2025 के आयोजन में स्थिरता, वैश्विक प्रचार और सांस्कृतिक पर्यटन के पहलुओं का विश्लेषण करने के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक पद्धति अपनाई गई है। इसमें प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त डेटा का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक डेटा के लिए, महाकुम्भ मेला आयोजन से जुड़े सरकारी रिपोर्ट, योजनाएँ और घोषणाएँ, साथ ही विभिन्न मीडिया स्रोतों, सरकारी बयान, और आधिकारिक प्रेस विज्ञप्तियों का अध्ययन किया गया। इसके अलावा, महाकुम्भ मेला के आयोजकों और पर्यटकों से संबंधित साक्षात्कार और सर्वेक्षण भी किए गए, ताकि वास्तविक समय में योजनाओं के प्रभाव और उनके कार्यान्वयन का आकलन किया जा सके। यह प्रक्रिया

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

उन पहलुओं को उजागर करेगी, जो स्थिरता, वैश्विक प्रचार और सांस्कृतिक पर्यटन के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है।

द्वितीयक डेटा में, महाकुम्भ मेला और संबंधित परियोजनाओं पर प्रकाशित विभिन्न शोध पत्रों, साहित्य, और मीडिया लेखों का विश्लेषण किया गया। इस डेटा का गहन अध्ययन करके, पर्यावरणीय स्थिरता, वैश्विक प्रचार की रणनीतियाँ और सांस्कृतिक पर्यटन के दृष्टिकोण से किए गए उपायों का मूल्यांकन किया गया।इस शोध का उद्देश्य महाकुंभ 2025 में लागू किए गए विकासात्मक प्रयासों और उनकी प्रभावशीलता पर एक विस्तृत और समग्र दृष्टिकोण प्रदान करना है।

निष्कर्ष– प्रयागराज महाकुंभ 2025 न केवल भारतीय आध्यात्मिकता और परंपरा का प्रतीक है, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर भारत की सांस्कृतिक शक्ति, प्रशासनिक दक्षता और पर्यटन क्षमताओं को भी उजागर करता है। यह शोध पत्र इस तथ्य को रेखांकित करता है कि महाकुंभ को दिव्य, भव्य और डिजिटल आयोजन के रूप में प्रस्तुत करने की रणनीति इसे वैश्विक स्तर पर अधिक आकर्षक और प्रभावशाली बना रही है, जिससे यह दुनिया भर से करोड़ों श्रद्धालुओं और पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है। सरकार द्वारा कार्यान्वित स्थिरता संबंधी पहलों ने आयोजन को पर्यावरण–संवेदनशील और दीर्घकालिक प्रभाव बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वच्छता एवं हरित संरचना को प्राथमिकता देने से यह सुनिश्चित किया गया है कि आयोजन केवल एक अस्थायी सांस्कृतिक मिलन न होकर स्थायी पर्यावरणीय उत्तरदायित्व का उदाहरण भी बने। वैश्विक प्रचार अभियानों, जैसे डिजिटल मार्केटिंग, सोशल मीडिया अभियानों, अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक साझेदारियों एवं पर्यटन को बढ़ावा देने वाली सरकारी पहलों ने प्रयागराज महाकुंभ को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर असाधारण पहचान दिलाई है।

इसके अतिरिक्त, सांस्कृतिक पर्यटन को प्रोत्साहित करने वाली योजनाओं, जैसे कि पारंपरिक कला, संगीत, नृत्य और योग संबंधी विशेष कार्यक्रमों ने भारत की सांस्कृतिक धरोहर को व्यापक स्तर पर स्थापित किया है। महाकुंभ अब केवल आध्यात्मिक अनुष्ठान न होकर एक सांस्कृतिक कूटनीतिक मंच भी बन चुका है, जिससे भारत अपनी समृद्ध परंपराओं, जीवनशैली और मूल्यों को विश्व समुदाय के समक्ष प्रभावी रूप से प्रस्तुत कर रहा है। यह शोध दर्शाता है कि महाकुंभ केवल एक धार्मिक आयोजन नही बल्कि कूटनीति, पर्यटन–आधारित आर्थिक विकास और सुव्यवस्थित प्रशासन का एक प्रभावी उदाहरण भी है। इस आयोजन के माध्यम से भारत ने यह प्रमाणित किया है कि सांस्कृतिक धरोहर और परंपराएँ न केवल राष्ट्रीय पहचान को सुदृढ़ कर सकती हैं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि को भी नया आयाम प्रदान कर सकती हैं। अंततः प्रयागराज महाकुंभ 2025 आस्था, प्रशासनिक दक्षता और वैश्विक पहचान का अद्वितीय संगम है, जो भारत को सांस्कृतिक कूटनीति और सतत पर्यटन के क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान करने वाला ऐतिहासिक आयोजन सिद्ध हो सकता है। अंततः प्रयागराज महाकुंभ 2025 आस्था, प्रशासनिक दक्षता और वैश्विक पहचान का अद्वितीय संगम है, जो भारत को सांस्कृतिक कूटनीति और सतत पर्यटन के क्षेत्र में एक नई दिशा प्रदान करने वाला ऐतिहासिक आयोजन सिद्ध हो सकता है।

सुझाव–

1. डिजिटल और वैश्विक प्रचार को सशक्त बनाया जाए

- महाकुंभ को विश्व पटल पर प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने के लिए डिजिटल प्लेटफार्मों, वृत्तचित्रों

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

और वर्चुअल टूर जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग हो।

- विदेशी मीडिया, सांस्कृतिक संगठनों और भारतीय दूतावासों के सहयोग से व्यापक प्रचार अभियान चलाया जाए।

2. अंतरराष्ट्रीय सहभागिता को बढ़ावा दिया जाए

- महाकुंभ को वैश्विक आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मिलन केंद्र के रूप में प्रस्तुत किया जाए, जहाँ विभिन्न देशों के योगी, संत, विचारक और सांस्कृतिक राजदूत शामिल हों।
- विदेशी पर्यटकों और शोधकर्ताओं के लिए विशेष जानकारी केंद्र, भाषाई अनुवाद सुविधाएँ और सांस्कृतिक कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ।

3. आधारभूत संरचना और पर्यावरण संरक्षण प्राथमिकता बने

- कुंभ मेले के दौरान यातायात, परिवहन और ठहरने की सुविधाओं को आधुनिक और व्यवस्थित किया जाए, जिससे श्रद्धालुओं और पर्यटकों को बेहतर अनुभव मिले।
- गंगा सफाई अभियान को तीव्र गति दी जाए और महाकुंभ को ष्ग्रीन इवेंटष् बनाने के लिए प्लास्टिक मुक्त और पर्यावरण–अनुकूल योजनाएँ लागू की जाएँ।

4. सांस्कृतिक कूटनीति को सशक्त किया जाए

- महाकुंभ को भारत की ष्सॉफ्ट पावरष् के रूप में वैश्विक मंच पर स्थापित किया जाए, जहाँ भारतीय दर्शन, योग, आयुर्वेद और कला को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिले।
- यूनेस्को, अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संगठनों और विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ संयुक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम और विचार गोष्ठियाँ आयोजित की जाएँ।

5. सुरक्षा और आपदा प्रबंधन को मजबूत किया जाए

- AI- आधारित भीड़ नियंत्रण प्रणाली, CCTV निगरानी और रीयल–टाइम डेटा विश्लेषण के माध्यम से सुरक्षा व्यवस्था को अभूतपूर्व बनाया जाए।
- आपातकालीन चिकित्सा सेवाओं और बचाव दलों की तत्परता सुनिश्चित की जाए, जिससे किसी भी अप्रत्याशित स्थिति से प्रभावी ढंग से निपटा जा सके।

निष्कर्षतः, महाकुंभ 2025 भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रतीक बनने की दिशा में एक महत्वपूर्ण अवसर है। डिजिटल प्रचार, अंतरराष्ट्रीय सहभागिता, बेहतर आधारभूत संरचना, सांस्कृतिक कूटनीति और मजबूत सुरक्षा प्रबंधन के माध्यम से इसे एक सफल आयोजन बनाया जा सकता है। यह केवल आस्था का पर्व नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक शक्ति का वैश्विक प्रदर्शन होगा।

संदर्भ सूची–

1. भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय. ''महाकुंभ मेला 2025 : आस्था, संस्कृति और आध्यात्मिक विरासत का पवित्र संगम'' प्रेस सूचना ब्यूरो, 4 दिसम्बर 2024, नई दिल्ली।
https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2080741
2- UNESCO. "What is Intangible Heritage?" https://ich.unesco.org/en/what-is-intangible-heritage-00003
3. उत्तर प्रदेश सरकार, ''मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची पर कुंभ मेले का अभिलेख''

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed (Refereed) International Journal
Volume 04, Issue 06, June 2025

जिला प्रयागराज, 7 दिसम्बर 2017। https://prayagraj.nic.in

4. Nye, Joseph S. "Soft Power,"Foreign Policy, vad 80, 1990, i`"B 153-171। JSTOR. www.jstor.org
5. https://kumbh.gov.in/en/historicalsignificance
6. https://kumbh.gov.in/
7. भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय. ''प्रयागराज कुंभ मेला 2019 : गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में शामिल'' प्रेस सूचना ब्यूरो, 3 मार्च 2019, नई दिल्ली।
https://pib.gov.in/Pressreleaseshare.aspx?PRID=1567238
8. भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय. ''महाकुंभ 2025 : 15 लाख विदेशी पर्यटकों सहित 45 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं के शामिल होने की उम्मीद'' प्रेस सूचना ब्यूरो, 20 जनवरी 2025, नई दिल्ली।
https://pib.gov.in/PressReleseDetail.aspx?PRID=2094640&reg=3&lang=1
9. भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय. ''वैश्विक महाकुंभ 2025 : आध्यात्मिक भव्यता और सांस्कृतिक विरासत का उत्सव'' प्रेस सूचना ब्यूरो, 6 जनवरी 2025, नई दिल्ली।
https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=2090689
10. प्रयागराज मेला प्राधिकरण, ''2019 कुंभ मेला रिपोर्ट'' उत्तर प्रदेश सरकार, 2019।
https://www.jansatta.com/rajya/49-days-prayagraj-kumbh-mela-ended-with-mahashivratri-dip-on-monday-jsp/933544/
11. https://www.sustain.ucla.edu/what-is-sustainability/
12. भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय. ''वित्र और स्वच्छ : महाकुंभ 2025 में स्वच्छता की पहल'' प्रेस सूचना ब्यूरो, 24 जनवरी 2025, नई दिल्ली। https://pib.gov.in/PressReleseDetail.aspx?PRID=2096044&reg=3&lang=2
13. https://www.creatingtomorrowsforests.co.uk/blog/the-miyawaki-method-for-creating-forests
14. भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय. ''प्रयागराज में पिछले दो वर्षों में मियावाकी तकनीक का उपयोग करके लगभग 56,000 वर्ग मीटर घने जंगल बनाए गए'' प्रेस सूचना ब्यूरो, 18 जनवरी 2025, नई दिल्ली।
https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2091250
15. https://ddnews.gov.in/mahakumbh-2025-tourism-ministry-sets-up-5000-square-feet-incredible-india-pavilion-in-prayagraj/
16. https://www.allianceair.in/our-company
17. भारत सरकार, पर्यटन मंत्रालय. ''महाकुंभ 2025 को वैश्विक पर्यटन केंद्र के रूप में बढ़ावा देने के लिए कई अहम कदम उठाए'' प्रेस सूचना ब्यूरो, 12 जनवरी 2025, नई दिल्ली।
https://pib.gov.in/PressReleseDetail.aspx?PRID=2092203&reg=3&lang=2
18. भारत सरकार, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, ''कुंभ अवधि के दौरान आकाशवाणी का 'कुंभवाणी' चैनल प्रयागराज से देश–दुनिया तक महाकुंभ परंपरा का प्रचार करेगा'' प्रेस सूचना ब्यूरो, जनवरी 2025, नई दिल्ली।
https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2091562
19. भारत सरकार, पर्यटन मंत्रालय. ''देखो अपना देश अभियान''प्रेस सूचना ब्यूरो, 19 दिसम्बर 2024, नई दिल्ली।
https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=2086011
20. https://upstdc.co.in/
21. https://www.irctctourism.com/mahakumbhgram
22. https://tourism.gov.in/whats-new/itdc-luxury-camps-mahakumbh-prayagraj-2025
23. भारत सरकार, पर्यटन मंत्रालय. ''आगंतुकों के लिए लग्जरी आवास, टूर पैकेज और बेहतर कनेक्टिविटी'' प्रेस सूचना ब्यूरो, 12 जनवरी 2025, नई दिल्ली।
https://pib.gov.in/PressReleseDetail.aspx?PRID=2092203&reg=3&lang=2